

DAILY CURRENT AFFAIRS

IN HINDI

SPECIAL FOR UPSC & GPSC EXAMINATION

DATE : 02-07-25



The Hindu Important News Articles & Editorial For UPSC CSE

Wednesday, 02 July, 2025

Edition : International Table of Contents

Page 01 Syllabus : GS 2 : International Relations	भारत को आतंकवाद के खिलाफ खुद की रक्षा करने का अधिकार है: जयशंकर
Page 02 Syllabus : GS 1 : Indian Society	केरल ने मुन्नार को 'जिम्मेदार पर्यटन स्थल' के रूप में ब्रांड करने के लिए अभियान शुरू किया
Page 06 Syllabus : Prelims Pointer	नौसेना ने रिकॉर्ड समय में दूसरा स्वदेशी स्टील्थ फ्रिगेट शामिल किया
Page 07 Syllabus : GS 3 : Environment & Ecology	कर्नाटक के कठोर चट्टानी इलाके में भूजल संकट गहराता जा रहा है
Page 09 Syllabus : GS 1 : Indian Society	महिलाओं और बच्चों को सशक्त बनाने के लिए तकनीक का उपयोग
Page 08 : Editorial Analysis: Syllabus : GS 2 : International Relations	दक्षिण एशिया की सत्ता की राजनीति में त्रिकोणीय गतिशीलता

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने वाशिंगटन डीसी में क्वाड विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लेते हुए आतंकवाद के खिलाफ भारत के आत्मरक्षा के अधिकार पर जोरदार ढंग से जोर दिया, तथा भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं और आतंकवाद के प्रति शून्य सहिष्णुता बनाए रखने की वैश्विक जिम्मेदारी को रेखांकित किया।

India has right to defend itself against terror: Jaishankar

Kallol Bhattacharjee
NEW DELHI

India has “every right” to defend its people against terrorism and the partners of the Quad grouping should “appreciate” that, External Affairs Minister S. Jaishankar said in Washington DC, where he participated in the Quad Foreign Ministers-level meeting on Tuesday.

Mr. Jaishankar said a “more focused Quad” will “help deliver better”, while Australian Foreign Minister Penny Wong, in her opening remarks, made the mention of the March 28 earthquake in Myanmar where the Quad partners mobilised “quickly” to help the affected communities.

“A word about terrorism

in the light of our recent experience: The world must display zero tolerance. Victims and perpetrators must never be equated and India has every right to defend its people against terrorism and we will exercise that right. We expect our Quad partners to understand and appreciate that,” Mr. Jaishankar said in his opening remarks at the meeting, which is being hosted by U.S. Secretary of State Marco Rubio. Mr. Rubio had hosted his counterparts from Australia, India and Japan on the sidelines of the swearing-in ceremony of President Donald Trump in January.

‘Significant progress’

Mr. Jaishankar reiterated India’s commitment to a rules-based international



External Affairs Minister S. Jaishankar with Australian Foreign Minister Penny Wong, Japanese Foreign Minister Takeshi Iwaya and U.S. Secretary of State Marco Rubio in Washington DC. AP

order and the “free and open Indo-Pacific”, and announced that India was on track to host the next Quad leaders’ summit.

The meeting in Washington DC is being attended by Japanese Foreign Minister Takeshi Iwaya. “It is essential that nations of the

Indo-Pacific have the freedom of choice, so essential to make right decisions on development and security,” said the External Affairs Minister, announcing that the grouping had made “significant progress” in maritime domain, logistics, education

and political coordination in the last few months.

“The working of the Quad is also being made more efficient through streamlining the Working Groups. A more cohesive, nimble and focused Quad will certainly help deliver better,” Mr. Jaishankar said.

He said India had some proposals to make the next Quad summit “productive”.

Ahead of the ministerial meeting, Mr. Jaishankar met his Japanese counterpart and held “comprehensive discussions on infrastructure, investment and mobility”. “Our special, strategic and global partnership continues to deepen and diversify,” said the Minister.

Ms. Wong echoed Mr.

Rubio’s earlier remarks and described the Indo-Pacific as the region where the “future of the 21st century is being shaped”. “Unfortunately, we meet in the backdrop of conflict and of escalating competition,” said Ms. Wong, arguing that in the backdrop of various conflicts, it was necessary to harness Quad’s “collective strength for peace, stability and prosperity for the Indo-Pacific and for our people.” She also noted that the Quad partners mobilised quickly to help Myanmar in the backdrop of the devastating earthquake that hit the country in March. Mr. Rubio mentioned that the Quad could “focus and build upon” the global supply chain of critical minerals.

बैठक की मुख्य बातें:

1. आतंकवाद पर भारत का दावा:

- विदेश मंत्री जयशंकर ने कहा कि भारत को आतंकवाद के खिलाफ अपने लोगों की रक्षा करने का “पूरा अधिकार” है।
- उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि पीड़ितों और अपराधियों को कभी भी समान नहीं माना जाना चाहिए, उन्होंने क्वाड भागीदारों से भारत की स्थिति को समझने और उसकी सराहना करने का आग्रह किया।
- यह बयान हाल ही में आतंकवाद से संबंधित अनुभवों की पृष्ठभूमि में आया है, जो संभवतः सीमा पार से आतंकी खतरों, विशेष रूप से पाकिस्तान से जारी रहने का संकेत देता है।

2. इंडो-पैसिफिक में भारत की भूमिका:

- एक स्वतंत्र, खुले और नियम-आधारित इंडो-पैसिफिक के लिए भारत की प्रतिबद्धता दोहराई।
- क्वाड सदस्यों के बीच समुद्री क्षेत्र जागरूकता, रसद, शिक्षा और राजनीतिक समन्वय में महत्वपूर्ण प्रगति पर प्रकाश डाला।

3. कुशल क्राड कामकाज:

- वितरण और समन्वय को बढ़ाने के लिए क्राड कार्य समूहों को सुव्यवस्थित किया जा रहा है।
- भारत ने अगले क्राड लीडर्स समिट को और अधिक उत्पादक बनाने के लिए पहल का प्रस्ताव रखा है, जो भारत की सक्रिय भूमिका को दर्शाता है।

4. द्विपक्षीय और बहुपक्षीय जुड़ाव:

- भारत और जापान के बीच बुनियादी ढाँचे, गतिशीलता और निवेश पर व्यापक वार्ता हुई।
- इंडो-पैसिफिक को 21वीं सदी के भविष्य को आकार देने वाले रणनीतिक क्षेत्र के रूप में देखा जाता है (जैसा कि ऑस्ट्रेलिया के विदेश मंत्री पेनी वोंग ने कहा है)।

5. मानवीय समन्वय:

- म्यांमार के मार्च 2025 के भूकंप पर क्राड की त्वरित प्रतिक्रिया को सामूहिक कार्रवाई और एकजुटता के उदाहरण के रूप में स्वीकार किया गया।

टिप्पणियों का महत्व:

1. आतंकवाद के खिलाफ भारत की वैश्विक स्थिति को मजबूत करना:

- जयशंकर का बयान भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और आत्मरक्षा के सिद्धांत को पुष्ट करता है।
- भारत राज्य प्रायोजित आतंकवाद की निंदा करने में अपने भागीदारों के साथ कूटनीतिक तालमेल चाहता है।

2. क्राड की सुरक्षा और विकास एजेंडे को संतुलित करना:

- जबकि क्राड एक सैन्य गठबंधन नहीं है, भारत आतंकवाद जैसे गैर-पारंपरिक खतरों के खिलाफ सुरक्षा सहयोग पर जोर देता है।
- भारत विकास सहयोग - शिक्षा, बुनियादी ढाँचा, आपदा राहत - पर भी ध्यान केंद्रित कर रहा है, जो इसके सॉफ्ट पावर प्रक्षेपण को मजबूत करता है।

3. इंडो-पैसिफिक में चीन के प्रभाव का मुकाबला करना:

- समुद्री सुरक्षा और महत्वपूर्ण आपूर्ति श्रृंखलाओं पर जोर देने का उद्देश्य स्पष्ट रूप से चीन के रणनीतिक प्रभुत्व का मुकाबला करना है।
- क्राड को अधिक सुसंगत और केंद्रित बनाने का भारत का प्रस्ताव क्षेत्रीय बहुध्रुवीयता के लिए महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष:

- क्राड बैठक में भारत का दृढ़ रुख रणनीतिक स्पष्टता और कूटनीतिक दृढ़ता के साथ आतंकवाद का मुकाबला करने के उसके दृढ़ संकल्प को दर्शाता है। साथ ही, इंडो-पैसिफिक सहयोग, मानवीय सहायता और आर्थिक लचीलेपन के प्रति उसकी प्रतिबद्धता वैश्विक नेतृत्व के प्रति संतुलित दृष्टिकोण को दर्शाती है। यदि क्राड को अधिक सुसंगत बनाया जाता है,

तो यह भारत के राष्ट्रीय हितों और क्षेत्रीय स्थिरता दोनों को आगे बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में काम कर सकता है।

UPSC Mains Practice Question

प्रश्न: भारत को आतंकवाद के खिलाफ अपनी रक्षा करने का पूरा अधिकार है। इसके मद्देनजर, भारत के सुरक्षा हितों को समर्थन देने में क्वाड जैसे रणनीतिक समूहों की भूमिका का परीक्षण करें। (250 Words)

Page : 02 : GS 1 : Indian Society

केरल सरकार ने दिसंबर 2025 तक लोकप्रिय हिल स्टेशन मुन्नार को 'जिम्मेदार पर्यटन स्थल' के रूप में पुनः ब्रांड करने की महत्वाकांक्षी पहल शुरू की है। यह कदम सतत पर्यटन और समावेशी विकास में वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप है।

Kerala launches drive to brand Munnar as 'Responsible Tourism Destination'

Dhinesh Kallungal

THIRUVANANTHAPURAM

The Kerala government has started working towards turning Munnar into a 'Responsible Tourism Destination' by December this year.

Through various sustainable tourism programmes, for which a total of ₹50 lakh has been sanctioned, the government aims to enhance the popularity of the famous hill station on global tourism platforms and attract more tourists to the State.

According to an official order, the government will develop Munnar as a 'net-zero tourist destination (minimising the carbon footprint of tourists)' by "protecting the delicate



Land of beauty: A view of the Munnar hill station from the Anayirankal gap in Idukki. JOMON PAMPAVALLEY

ecosystem around the hill station while undertaking responsible and sustainable tourism initiatives".

Popular tourist spot

Munnar is one of the most popular tourist destinations in Kerala, which gets around 12 lakh tourists annually (based on hotel occupancy data).

Considering the number of travellers visiting and returning the same day, the actual number of tourists visiting the destination is expected to be up to four times higher.

Gender-inclusive model

"As part of rebranding the destination, the primary focus will be on ensuring

gender equality and promoting it as a safe destination for women, both as hosts and guests, along with building sustainable and gender-inclusive tourism models," said a Tourism Department official.

Plastic-free zone

The authorities have started creating "village life experience" packages for guests and imparting training to various stakeholders in the sector, including local tourist guides, community tour leaders, as well as autorickshaw and taxi drivers.

Making the destination plastic-free before December and putting up signage and boards are among the standards set by the authorities.

पहल की मुख्य विशेषताएं:

1. सतत पर्यटन और नेट-जीरो लक्ष्य:

- इस योजना में मुन्नार को नेट-जीरो पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना शामिल है, जिसका उद्देश्य पर्यटकों के कार्बन फुटप्रिंट को कम करना है।
- स्थिरता और पर्यावरण मित्रता को बढ़ावा देने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के लिए ₹50 लाख मंजूर किए गए हैं।

2. नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा:

- अपनी समृद्ध जैव विविधता और नाजुक पारिस्थितिकी के लिए जाने जाने वाले मुन्नार को जिम्मेदार पर्यटन दिशानिर्देशों के तहत संरक्षित किया जाएगा।
- पारिस्थितिकी संरक्षण, विनियमित फुटफॉल और इको-टूरिज्म प्रथाओं पर जोर दिया जाएगा।

3. प्लास्टिक-मुक्त पहल:

- लक्ष्य दिसंबर 2025 से पहले मुन्नार को पूरी तरह से प्लास्टिक-मुक्त बनाना है।
- जिम्मेदार व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए साइनेज और जागरूकता बोर्ड लगाए जाएंगे।

4. लिंग-समावेशी पर्यटन:

- मुख्य ध्यान लैंगिक समानता पर है - मेजबान और पर्यटक दोनों के रूप में महिलाओं के लिए सुरक्षा और अवसरों को बढ़ावा देना।
- लिंग-संवेदनशील और समावेशी होने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम और पर्यटन मॉडल विकसित किए जा रहे हैं।

5. सामुदायिक भागीदारी और स्थानीय सशक्तिकरण:

- स्थानीय गाइड, टैक्सी चालक, ऑटो चालक और टूर ऑपरेटरों को स्थानीय समुदाय को जोड़ने और उन्हें आजीविका के अवसर प्रदान करने के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है।
- आगंतुकों को प्रामाणिक सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करने के लिए "ग्राम जीवन अनुभव" पैकेज तैयार किए जा रहे हैं।

पहल का महत्व:

- पर्यावरण संरक्षण: भारत की जलवायु प्रतिबद्धताओं और एसडीजी, विशेष रूप से एसडीजी 12 (जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन) और एसडीजी 13 (जलवायु कार्रवाई) के साथ संरेखित है।
- समावेशी विकास को बढ़ावा देना: महिलाओं की भागीदारी, स्थानीय रोजगार और समावेशी आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करता है।

- वैश्विक पर्यटन ब्रांडिंग: जिम्मेदार और टिकाऊ पर्यटन के मॉडल के रूप में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन प्लेटफार्मों पर मुन्नार की प्रोफाइल को बढ़ाता है।
- अनुकरणीय मॉडल: यदि सफल रहा, तो यह भारत में अन्य पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील पर्यटन स्थलों के लिए एक टेम्पलेट के रूप में काम कर सकता है।

चुनौतियाँ और आगे का रास्ता:

- कार्यान्वयन में बाधाएँ: दिसंबर से पहले सभी योजनाओं (प्लास्टिक प्रतिबंध, बुनियादी ढाँचा सेटअप, प्रशिक्षण) का समय पर क्रियान्वयन चुनौतियों का सामना कर सकता है।
- व्यवहार परिवर्तन: पर्यटकों और स्थानीय लोगों को स्थायी प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए निरंतर जागरूकता और निगरानी की आवश्यकता होती है।
- कार्बन फुटप्रिंट की निगरानी: उत्सर्जन, अपशिष्ट उत्पादन और संसाधन उपयोग जैसे पर्यावरणीय संकेतकों को मापने और रिपोर्ट करने के लिए प्रभावी तंत्र मौजूद होने चाहिए।

निष्कर्ष:

- मुन्नार को 'जिम्मेदार पर्यटन स्थल' के रूप में ब्रांड करने की केरल सरकार की पहल पर्यटन को स्थिरता, समावेशिता और स्थानीय सशक्तिकरण के साथ जोड़ने की दिशा में एक प्रगतिशील कदम को दर्शाती है।

UPSC Mains Practice Question

प्रश्न: सतत पर्यटन का मतलब सिर्फ पर्यावरण की रक्षा करना ही नहीं है, बल्कि समुदायों को सशक्त बनाना और समावेशिता सुनिश्चित करना भी है।" मुन्नार को एक जिम्मेदार पर्यटन स्थल के रूप में ब्रांड करने की केरल की पहल के संदर्भ में इस कथन की जाँच करें। (250 Words)

आईएनएस उदयगिरि प्रोजेक्ट 17ए के तहत दूसरा स्टील्थ फ्रिगेट है। रिकॉर्ड 37 महीनों में भारतीय नौसेना को सौंपा गया, जो कुशल स्वदेशी रक्षा उत्पादन का प्रदर्शन करता है। मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (MDSL), मुंबई द्वारा निर्मित। प्रोजेक्ट 17 के शिवालिक क्लास फ्रिगेट का उत्तराधिकारी।

Navy inducts second indigenous stealth frigate in record time

Delivered in 37 months, *INS Udaygiri* represents a 'quantum leap' in the Indian Navy's in-house design capabilities, says the Defence Ministry

Saurabh Trivedi
NEW DELHI

Showcasing the country's growing military manufacturing capabilities and enhancing its naval power, *INS Udaygiri* – the second ship of Project 17A's stealth frigates – was delivered to the Indian Navy on Tuesday, according to a Defence Ministry statement.

The project is a successor of the Shivalik class frigates of Project 17 (P-17) that are now in active service. *Udaygiri* is the second among the seven Project 17A (P-17A) frigates under construction at Mazagon Dock Shipbuilders Ltd. (MDSL) in Mumbai, and Garden Reach Shipbuilders and Engineers in Kolkata.

These multi-mission frigates are capable of operating in a 'blue water' environment – referring to the open ocean – dealing with both conventional and non-conventional threats in the area of India's maritime interests, the Ministry said, adding that the remaining five ships will be



Udaygiri, the second ship of Project 17A stealth frigate, was delivered to the Indian Navy on Tuesday. PTI

delivered progressively by the end of 2026.

"*Udaygiri* has been delivered to the Indian Navy in a record time of 37 months from the date of launching," the Ministry statement said. "It is a modern avatar of its predecessor, the erstwhile *INS Udaygiri*, which was a steam ship, decommissioned on August 24, 2007 after rendering 31 years of service to the nation."

'Quantum leap'

P-17A ships have enhanced stealth features and are fitted with an advanced,

state-of-the-art weapon and sensor suite, a significant upgrade from the P-17 class, the Ministry said. "The ships represent a quantum leap in the Indian Navy's in-house design capabilities at the Warship Design Bureau," the statement added.

The weapons suite comprises a supersonic surface-to-surface missile system, a medium-range surface-to-air missile system, a 76 mm gun, and a combination of 30 mm and 12.7 mm rapid-fire close-in weapon systems, according to the Ministry.

INS उदयगिरि की मुख्य विशेषताएं:

- स्टेल्थ-सक्षम, कम रडार और ध्वनिक हस्ताक्षरों वाला बहु-भूमिका फ्रिगेट।
- सुसज्जित:
 - सुपरसोनिक सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइलें
 - मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइलें
 - 76 मिमी नौसैनिक तोप, 30 मिमी और 12.7 मिमी CIWS

- नीले पानी के वातावरण (खुले महासागर) में संचालन करने में सक्षम।
- भारतीय नौसेना के युद्धपोत डिजाइन ब्यूरो द्वारा डिजाइन किया गया।

रणनीतिक महत्व:

- **स्वदेशीकरण को बढ़ावा:**
 - स्वदेशी युद्धपोत डिजाइन और विनिर्माण के लिए भारत की बढ़ती क्षमता को दर्शाता है।
 - रक्षा में आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया का समर्थन करता है।
- **समुद्री सुरक्षा में वृद्धि:**
 - इंडो-पैसिफिक में भारत की शक्ति प्रक्षेपण को बढ़ाता है।
 - समुद्री डकैती, आतंकवाद और प्रतिद्वंद्वी नौसेना की उपस्थिति जैसे खतरों के खिलाफ तत्परता बढ़ाता है।
- **तकनीकी छलांग:**
 - भारत की नौसेना डिजाइन क्षमताओं में "क्वांटम लीप" का प्रतीक है।
 - आधुनिक नेटवर्क-केंद्रित युद्ध प्रणाली की विशेषता है।
- **समय-दक्षता उपलब्धि:**
 - केवल 37 महीनों में डिलीवरी बेहतर परियोजना निष्पादन और जहाज निर्माण समयसीमा को दर्शाती है।

व्यापक निहितार्थ:

- महत्वपूर्ण रक्षा प्लेटफार्मों में भारत की आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है।
- क्षेत्रीय समुद्री कूटनीति और नौसैनिक सहयोग में भारत की भूमिका को मजबूत करता है।
- स्वदेशी युद्धपोतों की भविष्य की निर्यात क्षमता के लिए क्षमता का निर्माण करता है।

UPSC Prelims Practice Question

प्रश्न: INS उदयगिरि के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है/हैं?

1. यह प्रोजेक्ट 17A स्टील्थ फ्रिगेट के तहत दूसरा जहाज है।
2. इसे भारत के सहयोग से एक विदेशी नौसेना डिजाइन फर्म द्वारा डिजाइन किया गया है।
3. इसमें उन्नत स्टील्थ विशेषताएं और अत्याधुनिक हथियार और सेंसर सूट हैं।
4. इसे कोलकाता में गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (GRSE) द्वारा बनाया गया था।

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर चुनें:

- (A) केवल 1 और 2
 (B) केवल 1 और 3
 (C) केवल 1, 3 और 4
 (D) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (B)

वेल लैब्स द्वारा हाल ही में किए गए एक अध्ययन ने कर्नाटक के ऊपरी अर्कावती जलग्रहण क्षेत्र में भूजल की कमी की ओर महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया है। निष्कर्षों से पता चलता है कि डेक्कन पठार जैसे कठोर चट्टानी इलाकों में गंभीर जल विज्ञान संबंधी तनाव, पंचायतों पर आर्थिक बोझ और पारिस्थितिक क्षरण है, जहाँ लगभग 99% आबादी ग्रेनाइट और बेसाल्ट जलभृतों से प्राप्त भूजल पर निर्भर है।

Groundwater crisis deepens in Karnataka's hard rock terrain

In the Upper Arkavathy watershed, farmers drill borewells into the granite bedrock, creating microfractures that fast-track rainwater deep underground. As a result, instead of recharging shallow aquifers, water bypasses them entirely, disrupting local hydrology, weakening long-term water retention, and causing the water table to drop every year

Neelejanana Rai

Stretching across much of peninsular India, the Deccan Plateau hides a silent, subterranean struggle. Beneath its sun-baked soil lie ancient, fractured layers of basalt and granite – hard rock aquifers that dominate the region's groundwater story.

In Karnataka, this rocky reality is nearly absolute: about 99% of the State relies on these stubbornly unyielding formations for its water needs. With limited porosity and a dependence on narrow fractures and weathered pockets to store and move water, these geological formations offer far less than they promise, unlike the generous flow of sedimentary aquifers.

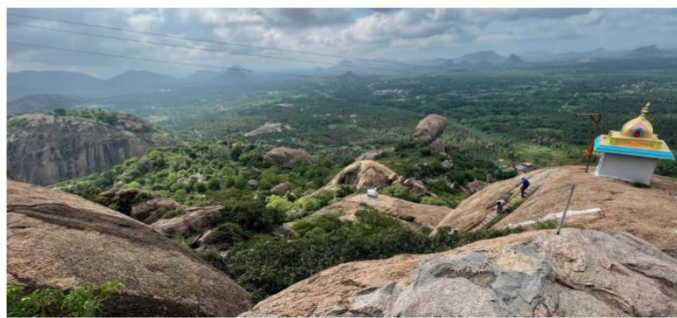
In a new study, researchers from the Water, Environment, Land and Livelihoods (WELL) Labs in Chennai examined Aralumallige and Doddathumakuru gram panchayats in the Upper Arkavathy watershed near Bengaluru, revealing a sharp decline in groundwater levels driven by intensive agricultural practices.

These areas supply vegetables, exotic crops, and flowers to Bengaluru, banking on water-intensive farming. While monsoon rains offer seasonal relief, farmers depend on deep borewells for the rest of the year. Borewells drilled into granite bedrock alter the subsurface geology, creating microfractures that fast-track rainwater deep underground. As a result, instead of recharging shallow aquifers, water bypasses them entirely, disrupting the local hydrology and weakening long-term water retention.

Every year, the water table continues to drop. According to the study, published recently in *PLoS Water*, the average depth of gram panchayat drinking water borewells dramatically increased from 183 m during 2001-2011 to 321 m in 2011-2021. Thus almost 55% of all wells drilled in the Aralumallige sub-watershed have failed, with a staggering 70% of drinking water wells failing within a decade of their construction, primarily due to falling water tables.

The study also highlighted water quality issues. While nitrate levels in drinking water were often higher than the prescribed norm of 50 mg/l, people didn't abandon their wells. Interviews with gram panchayat officials revealed that only two of the 79 abandoned borewells were shut due to elevated fluoride concentrations.

The findings collectively suggest groundwater quality issues, while acknowledged, aren't the primary drivers of borewell abandonment. Instead, the overwhelming cause is the chronic and



Trekkers explore the Kunagudi Betta with the Arkavathy river flowing to one side, in Ramanagara district about 50 km from Bengaluru. Researchers recently conducted studies in Aralumallige and Doddathumakuru gram panchayats in the Upper Arkavathy watershed. MURALI KUNAR K./THE HINDU

severe depletion of the water table.

Mounting challenges

Electricity is free for farmers, but gram panchayats are grappling with a mounting economic crisis. The frequent drilling of deep borewells, which require powerful pumps, has pushed them into steep electrical debt. Revenue collection can't cover the ballooning annual power bills, directly affecting the ability of panchayats to maintain rural water infrastructure. Funds meant for development projects are being redirected to cover utility costs, stalling local progress. Meanwhile, the State government has begun pressuring panchayats to pay outstanding taxes despite their financial strain.

Borewell drilling costs are borne by individuals. For small farmers, this means investing ₹4.5 lakh in a single borewell, with no guarantee of success. Many end up leasing their land and migrating to urban areas for a stable income. Labour, pump installation, and infrastructure expenses have hit the rural economy hard.

Despite widespread awareness of water scarcity, there have been few efforts to educate farmers on the consequences of water-intensive cropping. The region's terrain limits greywater reuse and youth migrating away further disrupts sustainable practices.

While Karnataka banned eucalyptus farming due to the species' high-water use, its long-term impact on groundwater persists.

The new study also pointed to a broader concern: despite widespread groundwater overexploitation, there is very little quantitative evidence on the risks to water sustainability at the local level. This makes

Panchayats are grappling with an economic crisis. Borewells that require powerful pumps have pushed them into electrical debt. Revenue collection cannot cover power bills, affecting the ability to maintain water infrastructure. Funds for development are being redirected to cover utility costs

it difficult to predict borewell failures or estimate the true costs faced by drinking water authorities.

The researchers have argued that poor water resource management is the biggest threat to sustained rural drinking water access in India. While global "water, sanitation, and hygiene" initiatives focus on technical and financial infrastructure, they often overlook the foundational problem: neglected resource management.

Efforts in motion

In the study, the researchers used data from the Sujala Project, a key groundwater recharge initiative by the Karnataka government, to trace depletion trends. They also referenced the Jal Jeevan Mission, India's flagship programme for universal piped water access, which has funded new infrastructure and replaced failed borewells. While the study wasn't directly critical of these programmes, it argued that long-term success hinges on addressing the root crisis: groundwater depletion and the financial strain it imposes on local governance.

As Lakshmi Kantha N.R., one of the study's authors, put it: "Until and unless

you change the farming technique of over-extraction, no amount of recharging will change the state of the groundwater" in Aralumallige, Doddathumakuru, and other rural parts of the Deccan Plateau. He also recommended that gram panchayats begin compensating farmers for using less electricity and extracting less water, encouraging more sustainable practices while reducing rising electricity bills.

"If such an initiative isn't taken," he warned, "within 3-4 years there will be no groundwater left to drink or use."

Until the 1970s, Bengaluru depended on tanks and reservoirs to replenish groundwater. But with the advent of borewells, which operate on shorter timescales, traditional systems were abandoned. In Aralumallige, the local lake, once a key recharge reservoir, has now been encroached upon, its soil dug up, its green cover denuded. Before borewells, the lake's discharge channels helped recharge surrounding areas. In 2022, despite heavy rainfall, the lake remained dry.

The findings paint a sobering picture: without urgent shifts in agricultural practices and stronger local governance, groundwater in the Deccan Plateau may slip beyond recovery. According to the researchers, sustainable farming, recharge infrastructure, and policy incentives must work in tandem and not as afterthoughts. The study recommends better policies and technologies to help rural farmers and governing bodies use their resources without inviting a crisis.

(Neelejanana Rai is a freelance journalist who writes about indigenous community, environment, science and health. neelejanai89@gmail.com)

THE GIST

Karnataka's groundwater is based mostly in hard rock aquifers. About 99% of the State relies on the Deccan Plateau's unyielding formations for water. With limited porosity, these geological formations offer far less than they promise, unlike sedimentary aquifers

Researchers who studied Aralumallige and Doddathumakuru panchayats in the Upper Arkavathy watershed found that the average depth of drinking water borewells increased from 183 m to 321 m. Almost 55% of all wells have failed, with 70% failing within a decade

Researchers found that poor management is the biggest threat to drinking water access. The root issues are depletion and the financial strain on local bodies. They warn that unless farmers are compensated to use less water, within 3-4 years there will be no groundwater left

मुख्य निष्कर्ष और मुद्दे:

1. हार्ड रॉक एक्वीफर्स की भूवैज्ञानिक सीमाएँ:

- कर्नाटक के ग्रेनाइट बेडरॉक में कम छिद्रता है और पानी को संग्रहीत करने और परिवहन के लिए संकीर्ण दरारों पर निर्भर करता है।

- गहरे बोरवेल खोदने से माइक्रोफ्रेक्चर बनते हैं जो वर्षा के पानी को उथले एक्कीफर्स से दूर ले जाते हैं, जिससे स्थानीय पुनर्भरण क्षमता कम हो जाती है।

2. अतिदोहन और जल स्तर में गिरावट:

- औसत बोरवेल की गहराई 183 मीटर (2001-2011) से बढ़कर 321 मीटर (2011-2021) हो गई।
- निर्माण के 10 वर्षों के भीतर 70% पेयजल कुएँ विफल हो गए।
- भूजल पुनर्भरण क्षेत्रों को बायपास करता है, जिससे जल स्तर में बारहमासी गिरावट आती है।

3. अस्थिर कृषि पद्धतियाँ:

- अरलुमलिगे और डोड्डाथुमाकुरु के किसान बेंगलुरु के बाजारों की आपूर्ति के लिए पानी की अधिक खपत वाली फ़सलें उगाते हैं।
- बोरवेल पर अत्यधिक निर्भरता और जागरूकता की कमी के कारण भूजल का अनियंत्रित दोहन हुआ है। 4. जल गुणवत्ता संबंधी मुद्दे:
- कई क्षेत्रों में नाइट्रेट संदूषण सुरक्षित सीमा से अधिक है।
- इसके बावजूद, गुणवत्ता के कारणों से कुओं को शायद ही कभी छोड़ा जाता है - मात्रा प्रमुख चिंता का विषय बनी हुई है।

5. आर्थिक और शासन संकट:

- किसानों के लिए मुफ्त बिजली ने अत्यधिक पंपिंग और ग्राम पंचायतों के लिए बढ़ते बिजली ऋण को जन्म दिया है।
- विकास निधि को बिजली बिलों का भुगतान करने के लिए डायवर्ट किया जा रहा है, जिससे स्थानीय शासन व्यवस्था चरमरा रही है।
- बोरवेल ड्रिलिंग की लागत (₹4-5 लाख) छोटे किसानों के लिए वहनीय नहीं है, जिससे उन्हें पलायन करना पड़ता है या जमीन पट्टे पर लेनी पड़ती है।

6. कमजोर संसाधन प्रबंधन:

- सुजला और जल जीवन मिशन जैसे कार्यक्रमों ने बुनियादी ढांचे में सुधार किया है, लेकिन भूजल स्थिरता के मूल मुद्दे को संबोधित करने में विफल रहे हैं।
- टैंक और झीलों जैसी पारंपरिक प्रणालियों पर अतिक्रमण किया गया है या उन्हें खराब किया गया है, जिससे पुनर्भरण स्रोत बंद हो गए हैं।

परिणाम:

- पारिस्थितिकी: अच्छी बारिश के बाद भी जल विज्ञान बाधित और झीलें सूख रही हैं (उदाहरण के लिए, अरलुमलिगे में)।
- सामाजिक: ग्रामीण युवाओं का पलायन, कमजोर सामुदायिक संरचना और कृषि संकट में वृद्धि।
- आर्थिक: बढ़ती इनपुट लागत, घटती कृषि उत्पादकता और स्थानीय वित्त पर दबाव।
- शासन: ग्राम पंचायतें बिजली ऋण और विफल बोरवेल के कारण बुनियादी ढांचे को बनाए रखने या जल सुरक्षा में निवेश करने में असमर्थ हैं।

आगे की राह:

1. कृषि पद्धतियों में सुधार:

- कम पानी वाली फसलों की ओर रुख करें।
- जैविक और जलवायु-लचीली खेती को बढ़ावा दें।

2. स्थानीय शासन को मजबूत करें:

- पानी/बिजली का उपयोग कम करने वाले किसानों के लिए वित्तीय प्रोत्साहन पेश करें।
- समुदाय-आधारित जल प्रबंधन और जलभृत मानचित्रण को लागू करें।

3. पारंपरिक प्रणालियों को बहाल करें:

- टैंकों, झीलों और रिचार्ज चैनलों का कायाकल्प करें।
- जल निकायों को अतिक्रमण और वनों की कटाई से बचाएं।

4. एकीकृत नीति दृष्टिकोण:

- बुनियादी ढांचे को व्यवहार परिवर्तन और संसाधन संरक्षण के साथ जोड़ें।
- ग्राम पंचायत स्तर पर डेटा-संचालित नियोजन और भूजल बजट को प्रोत्साहित करें।

निष्कर्ष:

- कर्नाटक के कठोर चट्टानी क्षेत्रों में संकट भूजल पर असंवहनीय निर्भरता की व्यापक चुनौती को दर्शाता है, जो खराब नियोजन, कमजोर प्रवर्तन और अल्पकालिक बुनियादी ढाँचे के समाधानों से और भी जटिल हो गया है। जल सुरक्षा और टिकाऊ ग्रामीण आजीविका सुनिश्चित करने के लिए, भारत को स्थानीय स्तर के संसाधन प्रबंधन, कृषि-पारिस्थितिकी नियोजन और सामुदायिक सहभागिता को प्राथमिकता देनी चाहिए।

UPSC Mains Practice Question

प्रश्न: दक्कन पठार जैसे कठोर चट्टानी इलाकों में भूजल प्रबंधन की चुनौतियों पर चर्चा करें। प्रायद्वीपीय भारत में भूवैज्ञानिक विशेषताएँ जलभृत की स्थिरता को कैसे प्रभावित करती हैं? (250 Words)

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (MoWCD), विकसित भारत@2047 के विजन के तहत, शासन में डिजिटल तकनीकों को एकीकृत करने में सबसे आगे रहा है। कई तकनीक-संचालित योजनाओं के माध्यम से, इसका उद्देश्य महिलाओं और बच्चों के लिए विशेष रूप से जमीनी स्तर पर अधिकार, पहुँच, सुरक्षा और सशक्तिकरण सुनिश्चित करना है।

Using tech to empower women and children

Empowerment begins with access – access to rights, to services, to protection, and to opportunity. Over the past decade, this access has been redefined and democratised through the focused commitment of the Modi government to build a more inclusive and digitally empowered India. The Ministry of Women and Child Development has been at the forefront of this transformation. Guided by Prime Minister Narendra Modi's vision of Viksit Bharat@2047, the Ministry has integrated technology into its programmes, ensuring that benefits reach the last mile swiftly, transparently, and efficiently.

What was once aspirational is now operational thanks to the government's emphasis on digital public infrastructure, real-time data systems, and responsive governance. With steadfast focus on care, protection, and empowerment, the Ministry has strengthened access to nutrition, education, legal safeguards, and essential entitlements, ensuring that women and children lead healthier, more secure lives, and also emerge as confident leaders and change makers of Amrit Kaal.

Transformative initiatives

A cornerstone of this transformation is the Saksham Anganwadi initiative, designed to modernise and empower over 2 lakh Anganwadi centres across India. These centres are being upgraded with smart infrastructure, digital devices, and innovative learning tools, enabling more effective delivery of nutrition, healthcare, and pre-school education services.

The integration of services provided by 14 lakh Anganwadi centres across the nation with the Poshan Tracker has enabled real-time data entry, performance monitoring, and evidence-based policy interventions. Over 10.14 crore beneficiaries, including pregnant women, lactating mothers, children under six, and adolescent girls, are now



Annapurna Devi
Union Minister of
Women and Child
Development

registered on Poshan Tracker. By equipping Anganwadi workers with smartphones and comprehensive training, the initiative ensures quality service delivery at the last mile.

At its core, Poshan Tracker is driving the national vision of a Swasth Bharat, Suposhit Bharat. It reimagines Anganwadi centres as digitally empowered community hubs that bridge the urban-rural divide. Recognised with the Prime Minister's Award for Excellence in Public Administration (2025), it also supports Poshan Bhi, Padhai Bhi, providing digital training modules to Anganwadi workers for early childhood education.

Further, to reduce leakages in the Supplementary Nutrition Programme, a facial recognition system has been introduced to ensure that eligible beneficiaries alone receive nutrition support.

Beyond nutrition, the Ministry is ensuring safety and support for women through technology-led platforms. The SHe-Box portal provides single-window access to every woman to lodge complaints under the Sexual Harassment of Women at Workplace (Prevention, Prohibition and Redressal) Act, 2013. It enables online redressal and tracking. Meanwhile, the Mission Shakti dashboard and mobile app provide integrated assistance to women in distress, connecting them to the nearest one-stop centre, now operational in nearly every district. These interventions exemplify how technology is being used not just for efficiency, but for justice, dignity, and empowerment.

The Modi government has also operationalised the Pradhan Mantri Matru Vandana Yojana (PMMVY) – a game changer in maternal welfare. Under the PMMVY Rules, 2022, pregnant women receive ₹5,000 for their first child. Under Mission Shakti, the benefit extends to ₹6,000 if the second child is a girl – promoting positive reinforcement for daughters. Delivered through a paperless Direct Benefit Transfer system, about ₹19,000 crore has

reached over 4 crore women beneficiaries since its inception.

PMMVY is a fully digital programme – leveraging Aadhaar-based authentication, mobile-based registration, doorstep assistance from Anganwadi/ASHA workers, and real-time dashboards. A dedicated grievance redressal module and citizen-facing portal ensure transparency, trust, and accountability, strengthening the government's commitment to Beti Bachao, Beti Padhao.

Tangible outcomes

These targeted efforts are delivering tangible outcomes. The latest reports from the Health Management Information System of the Ministry of Health and Family Welfare (MoHFW) reveal that the Sex Ratio at Birth has increased from 918 (2014-15) to 930 (2023-24). The Maternal Mortality Rate has declined to 97 per 1,000 births (2018-20) from 130 per 1,000 births (2014-16).

Digital transformation has played a key role in child protection and welfare. Under the Juvenile Justice Act (Care and Protection of Children) Act, 2015, the Ministry has strengthened the adoption ecosystem through the CARINGS portal (Child Adoption Resource Information and Guidance System). This ensures a more transparent, accessible, and efficient adoption process.

Digitisation has also improved monitoring of child care institutions, foster care placements, and statutory support structures under the Act. Platforms developed by the National Commission for Protection of Child Rights are tracking violations of child rights. The Mission Vatsalya dashboard strengthens convergence and coordination among various child welfare stakeholders.

This is New India where governance meets technology, and policy meets purpose. Over the last decade, the Ministry has not only adapted to digital change, but championed it.

Over the last decade, the Ministry has strengthened access to nutrition, education, legal safeguards, and essential entitlements

प्रमुख डिजिटल पहल:

1. सक्षम आंगनवाड़ी:

○ 2 लाख से अधिक आंगनवाड़ी केंद्रों को स्मार्ट बुनियादी ढांचे, डिजिटल उपकरणों और प्रारंभिक शिक्षण उपकरणों के साथ उन्नत किया जा रहा है।

○ उद्देश्य: आधुनिक तरीके से पोषण, स्वास्थ्य सेवा और प्री-स्कूल शिक्षा की डिलीवरी में सुधार करना।

2. पोषण ट्रैकर:

- 14 लाख आंगनवाड़ी केंद्रों को डिजिटल रूप से जोड़ता है, जिससे वास्तविक समय में डेटा की निगरानी, लाभार्थियों की कुशल ट्रैकिंग और नीति निर्णय लेने में मदद मिलती है।
- 10 करोड़ से अधिक लाभार्थी (गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं और 6 वर्ष से कम उम्र के बच्चों सहित) को कवर किया जाता है।
- स्मार्टफोन और डिजिटल प्रशिक्षण के साथ श्रमिकों को सशक्त बनाता है।
- लोक प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए पीएम पुरस्कार (2025) से सम्मानित।

3. पोषण वितरण में चेहरे की पहचान:

- लीकेज को रोकने और यह सुनिश्चित करने के लिए पेश किया गया कि केवल पात्र लाभार्थियों को ही पूरक पोषण मिले।

4. महिलाओं के लिए डिजिटल सुरक्षा प्लेटफॉर्म:

- शी-बॉक्स: कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न अधिनियम के तहत शिकायत दर्ज करने और उन पर नज़र रखने के लिए वन-स्टॉप पोर्टल।
- मिशन शक्ति डैशबोर्ड और ऐप: संकटग्रस्त महिलाओं के लिए लगभग हर जिले में वन-स्टॉप सेंटर (ओएससी) तक त्वरित पहुँच प्रदान करता है।

5. प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (पीएमएमवीवाई):

- मातृ लाभ के लिए कागज़ रहित प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (पहले बच्चे के लिए ₹5,000; दूसरी लड़की के लिए ₹6,000)।
- शुरुआत से अब तक 4 करोड़ महिलाओं को ₹19,000 करोड़ से अधिक वितरित किए गए।
- आधार-आधारित प्रमाणीकरण और रीयल-टाइम डैशबोर्ड के साथ पूरी तरह से डिजिटल।

6. बाल कल्याण डिजिटलीकरण:

- केयरिंग पोर्टल किशोर न्याय अधिनियम के तहत बाल गोद लेने में पारदर्शिता और दक्षता सुनिश्चित करता है।
- बाल देखभाल संस्थानों और वैधानिक निकायों की निगरानी अब तकनीक-सक्षम है।
- मिशन वात्सल्य डैशबोर्ड बाल संरक्षण हितधारकों के बीच अभिसरण को बढ़ावा देता है।

प्रभाव और परिणाम:

- जन्म के समय लिंग अनुपात 918 (2014-15) से बढ़कर 930 (2023-24) हो गया।
- 6 साल की अवधि में मातृ मृत्यु दर 130 से घटकर 97 प्रति 1,000 जीवित जन्म हो गई।
- तकनीक आधारित वितरण पारदर्शिता, जवाबदेही और अंतिम मील तक बेहतर पहुँच सुनिश्चित करता है।
- बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, मिशन शक्ति और मिशन वात्सल्य जैसे नीतिगत उपकरण अब डिजिटल नींव पर टिके हुए हैं, जो उन्हें प्रभावी कार्रवाई ढांचे में बदल रहे हैं।

शासन और विकास के लिए महत्व:

- बेहतर सेवा वितरण: वास्तविक समय की निगरानी अक्षमताओं को कम करती है और यह सुनिश्चित करती है कि सेवाएँ पारगमन में खो न जाएँ।
- महिला सशक्तिकरण: वित्तीय समावेशन (डीबीटी के माध्यम से) से लेकर शिकायत निवारण और सुरक्षा तक, तकनीक महिलाओं को लाभार्थियों और प्रतिभागियों के रूप में सशक्त बनाती है।
- बाल कल्याण और संरक्षण: डिजिटलीकरण ट्रेसबिलिटी, कानूनी अनुपालन और प्रणालीगत सुधार सुनिश्चित करता है।
- साक्ष्य-आधारित नीति: पोषण ट्रैकर और केयरिंग्स जैसे प्लेटफ़ॉर्म से डेटा सूचित निर्णय लेने और चुस्त शासन को सक्षम बनाता है।

आगे की चुनौतियाँ:

- पूर्ण लाभ के लिए ग्रामीण महिलाओं और श्रमिकों के बीच डिजिटल साक्षरता में सुधार होना चाहिए।
- दूरदराज के क्षेत्रों में कनेक्टिविटी के मुद्दे वास्तविक समय की निगरानी में बाधा डाल सकते हैं।
- डेटा गोपनीयता और डिजिटल पहचान (जैसे, चेहरे की पहचान) के नैतिक उपयोग को विनियमित किया जाना चाहिए।

आगे की राह:

- फ्रंटलाइन वर्कर्स (आंगनवाड़ी/आशा) के लिए प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देना।
- समग्र शासन के लिए डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के बीच अंतर-संचालन सुनिश्चित करना।
- नागरिक-सामने वाले पोर्टलों के माध्यम से सार्वजनिक भागीदारी और प्रतिक्रिया तंत्र को बढ़ावा देना।
- कमज़ोर आबादी के लिए डिजिटल विभाजन को पाटने के लिए समावेशी डिज़ाइन पर ध्यान केंद्रित करें।

निष्कर्ष:

- महिला और बाल कल्याण योजनाओं में प्रौद्योगिकी का एकीकरण भारतीय शासन में एक आदर्श बदलाव को दर्शाता है - प्रतिक्रियाशील सेवा वितरण से सक्रिय, पारदर्शी और जवाबदेह प्रशासन की ओर। अपने सबसे कमज़ोर नागरिकों को डिजिटल रूप से सशक्त बनाकर, भारत अमृत काल और विकसित भारत@2047 के लक्ष्यों को साकार करने के करीब पहुँच गया है।

UPSC Mains Practice Question

प्रश्न: प्रौद्योगिकी न केवल दक्षता के लिए एक उपकरण है, बल्कि सशक्तिकरण का एक साधन भी है। भारत में महिला एवं बाल विकास के लिए सरकारी पहलों के संदर्भ में चर्चा करें। (250 words)

Page : 08 Editorial Analysis

A triangular dynamic in South Asia's power politics

In the complex interplay of great power politics in South Asia, the triangular relationship between the United States, India and Pakistan reveals a story. It is one about enduring strategic necessity as much as it is about the contest of political ideologies, national interests and historical legacies.

United States President Donald Trump's recent lunch with Pakistan's Army Chief, Field Marshal Asim Munir – a deliberate overture laden with both symbolism and nostalgia – resurrects the ghosts of Cold War realpolitik. Mr. Trump's repeated claims, despite India's persistent denials, of having brokered a ceasefire between India and Pakistan, using trade as a lever, alongside his high-profile interaction with the Pakistan Army chief at the White House signals an American eagerness to revert to a diplomacy of shortcuts.

The Trump administration's transactional view of diplomacy, privileging deals over doctrines, has led to a turnaround in U.S.-Pakistan relations, casting a dark shadow over the delicate trust meticulously built through decades of U.S.-India counterterrorism cooperation as well as strategic convergence on China – a feat often regarded as one of the most creditable episodes of American diplomacy after the end of the Cold War.

America's pronounced shift

Mr. Trump's previous tenure as President was marked by an unusually blunt censure of Pakistan's notorious double-game of a Machiavellian policy of cooperating with western countries in counterterrorism, while simultaneously supporting terror outfits that serve its regional interests. This stance had struck a chord with New Delhi's unyielding approach toward terrorism, buttressing an already blooming 'natural partnership' with Washington. Yet, in the Trump administration's second tenure, a perceptible pivot has taken shape.

Very early on, the Trump White House reopened channels of security assistance to Pakistan, notably authorising \$397 million to sustain Islamabad's F-16 fleet – ostensibly for counter-terrorism purposes. Public acknowledgments from top American military officials, terming Pakistan as a "phenomenal partner" together with Mr. Trump's own gestures of gratitude toward Pakistan's cooperation in counter-terror operations, reveal an unmistakable recalibration that privileges immediate strategic utility and transactional gains over previously cultivated long-term vision of bilateral relationship. By lauding Pakistan's knowledge of Iran as "better than most", Mr. Trump has hinted at something far more combustible – that Pakistan's military could become a potential asset in navigating the volatile theatre of Iran-Israel conflict.

This American shift has naturally caused concern in New Delhi as it could prove a serious



Vinay Kaura

is Assistant Professor in the Department of International Affairs and Security Studies at the Sardar Patel University of Police, Security and Criminal Justice, Rajasthan, and Non-Resident Fellow, Institute of South Asian Studies, National University of Singapore

impediment to India's aspirations for a principled partnership with the Trump-led White House. The U.S., the self-styled custodian of a liberal international order that India has also sought to embrace, now appears to treat Pakistan not as a terror-permissive and nuclear-armed outcaste state, but as a strategic interlocutor deserving engagement. The recalibration is supported by multiple factors: economic incentives, personal rapport with Pakistan's military leadership, and America's continuing desire to retain leverage in Afghanistan, and the broader region surrounding China. For Pakistan, it represents a critical opportunity to retrieve lost diplomatic space and rehabilitate its tainted global image, though domestic political currents inject ambiguity into Islamabad's willingness to fully embrace cooperation with Washington.

India's doctrinal departure

Against this backdrop, the events of late April and early May have concretised the volatility inherent in South Asia's security architecture. The devastating terror attack in Pahalgam unleashed a decisive Indian military response. India's 'Operation Sindoor' marked a doctrinal departure from the long-standing policy of strategic restraint. Prime Minister Narendra Modi's declaration of a "new normal" has signalled a readiness to transcend previous thresholds, blending kinetic military retaliation with diplomatic campaign with the intent of isolating Pakistan globally and imposing accountability on the state apparatus that enables terrorist groups aligned against India. Mr. Modi's depiction of the ceasefire as a mere pause highlights India's broader aim to alter the calculus of Pakistan's hostility, even as Beijing's close ties with Islamabad and adversarial posture toward New Delhi amplify apprehensions of a two-front confrontation.

On the other hand, Pakistan has intensified its dual-track strategy that seeks to combine military posturing with diplomatic engagement with the U.S. with the aim of reviving international attention on the Kashmir issue. The unprecedented promotion of Asim Munir to the rank of field marshal also marks a consolidation of military primacy in Pakistan's national security framework. This entrenchment of a "hard state" doctrine, characterised by centralised military authority which remains fanatically resistant to civilian oversight, underscores Rawalpindi's determination to project unbending strength amid multiple internal and external pressures.

Simultaneously, Pakistan is attempting to capitalise on its geopolitical location and diplomatic slyness to maintain its indispensability in America's current strategic calculations. Islamabad's outreach to Washington, which is reflected in trade negotiations, concessions over rare earth minerals, and innovative economic partnerships entwined with American business

interests, suggests a cunning charm offensive to sustain international attention and economic lifelines. It is a strategy that perhaps recognises its own limitations in raw military power and economic scale but leverages the geographic centrality and personal diplomacy to maintain geopolitical relevance.

The U.S.'s role in this volatile equation is characterised by a deliberate ambivalence that reflects the complexity of its competing priorities. Washington today seems to have become preoccupied to the point of obsession with tariff and trade, implying that India's role in the Indo-Pacific attracts proportionately less attention than in the past, even though the Quad Foreign Ministers held their meeting in Washington on July 1.

New Delhi's persistent rejection of any third-party mediation in Kashmir underscores its determination to keep its core security issues tightly within its own sovereign domain. On the contrary, a Beijing-aligned Pakistan is desperate to embrace American engagement, perceiving it as a means to keep Kashmir from fading into diplomatic obscurity and to counterbalance India's manoeuvring space. However, any American effort to "hyphenate" New Delhi and Islamabad would run counter to India's vision of itself as a rising global power, while undermining bipartisan consensus to deepen ties with the U.S.

What drives Pakistan's relevance

Pakistan's continued relevance in American foreign policy seems to be driven by immutable facts of geography as well as carefully honed craft of personal diplomacy, giving its military leadership an inflated sense of purpose and power. Situated at the crossroads of South Asia, Central and West Asia, and bordering Iran, Afghanistan and China, there are certain quarters in Washington prone to the view that Pakistan is an indispensable linchpin to America's regional strategy, particularly in Afghanistan and Iran where its logistical and intelligence roles are still critical. This geographic leverage likely magnifies Pakistan's diplomatic voice in Washington, reinforcing a perception in Rawalpindi that it could help Pakistan counter India's superior economic and demographic credentials. Personal rapport in diplomatic corridors often translates into material and political support, ensuring Pakistan's endurance as a contradictory, yet "phenomenal" partner.

As enduring strategic sympathy for India becomes hostage to the shifting sands of personality-driven politics in the U.S., and the 'friend' in the U.S.-Pakistan frenemy dynamic gaining the upper hand, a geopolitically conscious Washington must walk a delicate tightrope. Each party seeks to instrumentalise the U.S. to its own ends, while American policy oscillates between idealism, realism and transactionalism.

In the ties between the United States, India and Pakistan, American policy now oscillates between idealism, realism and transactionalism

Paper 02 अंतरराष्ट्रीय संबंध

UPSC Mains Practice Question: संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत और पाकिस्तान के बीच विकसित हो रहे त्रिकोणीय संबंध भारत के सामरिक हितों के लिए अवसर और चुनौतियां दोनों प्रस्तुत करते हैं। आलोचनात्मक परीक्षण करें। (250 words)

संदर्भ:

- विनय कौरा का यह लेख भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका और पाकिस्तान के बीच विकसित हो रहे भू-राजनीतिक त्रिकोण पर चर्चा करता है, जिसमें डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा पाकिस्तान के सैन्य नेतृत्व के साथ नए सिरे से जुड़ाव के तहत अमेरिकी विदेश नीति में बदलाव और भारत की रणनीतिक गणना के लिए इसके निहितार्थों पर प्रकाश डाला गया है।

मुख्य मुद्दे और घटनाक्रम:**1. अमेरिका-पाकिस्तान संबंधों का पुनरुद्धार:**

- राष्ट्रपति ट्रम्प द्वारा पाकिस्तान के सेना प्रमुख फील्ड मार्शल असीम मुनीर के साथ सार्वजनिक रूप से बातचीत करना शीत युद्ध युग की वास्तविक राजनीति की प्रतीकात्मक वापसी को दर्शाता है।
- आतंकवाद पर पाकिस्तान के दोहरे व्यवहार की आलोचना करने वाली पिछली अमेरिकी स्थिति से बदलाव।
- सैन्य सहायता को फिर से शुरू करना (एफ-16 रखरखाव के लिए \$397 मिलियन) और कूटनीतिक प्रशंसा संबंधों के लेन-देन संबंधी पुनर्संतुलन का संकेत देती है।

2. यू.एस.-भारत रणनीतिक साझेदारी पर प्रभाव:

- यू.एस.-पाकिस्तान की बढ़ती निकटता को भारत द्वारा चिंता के साथ देखा जाता है, विशेष रूप से आतंकवाद और चीन के खिलाफ दशकों से बनी यू.एस.-भारत रणनीतिक अभिसरण के प्रकाश में।
- भारत यू.एस. द्वारा भारत-पाकिस्तान संबंधों को "एक दूसरे से जोड़ने" के किसी भी प्रयास को एक स्वतंत्र वैश्विक रणनीतिक साझेदार के रूप में अपनी स्थिति को पीछे हटाने के रूप में देखता है।

3. भारत का दृढ़ सुरक्षा सिद्धांत:

- आतंकवादी हमलों (जैसे, पहलगाम) के जवाब में, भारत ने ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया, जो रणनीतिक संयम से सक्रिय प्रतिशोध की ओर एक सैद्धांतिक बदलाव का प्रतीक है।
- प्रधानमंत्री मोदी द्वारा युद्ध विराम को "विराम" के रूप में परिभाषित करना पाकिस्तान के निवारण और कूटनीतिक अलगाव पर केंद्रित एक संशोधित राष्ट्रीय सुरक्षा रुख को दर्शाता है।

4. पाकिस्तान की दोहरी रणनीति:

- पाकिस्तान वाशिंगटन पर लक्षित कूटनीतिक आकर्षण हमलों के साथ-साथ सैन्य मुखरता (असीम मुनीर, केंद्रीकृत प्राधिकरण को बढ़ावा देना) का अनुसरण कर रहा है।
- अपनी भू-रणनीतिक स्थिति (अफ़गानिस्तान, ईरान और चीन से निकटता) का लाभ उठाते हुए, पाकिस्तान व्यापार, खनिज पहुँच और ईरान से संबंधित खुफिया जानकारी सहित अमेरिकी क्षेत्रीय रणनीति में अपनी प्रासंगिकता को फिर से स्थापित करना चाहता है।

5. अमेरिका की रणनीतिक महत्वाकांक्षा:

- अमेरिका आर्थिक व्यावहारिकता (व्यापार पर ध्यान केंद्रित) और क्षेत्रीय सुरक्षा (आतंकवाद का मुकाबला और चीन पर नियंत्रण) के बीच संतुलन बना रहा है।
- चीन को संतुलित करने में भारत के महत्व के बावजूद, इंडो-पैसिफिक और क्वाड में भारत की भूमिका पर पहले की तुलना में कम ध्यान दिया जा रहा है।

रणनीतिक निहितार्थ:

- **भारत के लिए:**
 - स्वायत्तता और रणनीतिक लाभ को बनाए रखने के लिए अपनी विदेश नीति को फिर से परिभाषित करना।
 - यह सुनिश्चित करना कि कश्मीर जैसे आंतरिक मामलों पर इसकी संप्रभुता बाहरी मध्यस्थता से समझौता न करे।

- पाकिस्तान और चीन दोनों के लिए एक वैश्विक शक्ति और लोकतांत्रिक प्रतिपक्ष के रूप में अपनी स्थिति पर जोर देना।
- **पाकिस्तान के लिए:**
 - अमेरिकी भागीदारी के माध्यम से अपनी अंतर्राष्ट्रीय छवि को पुनर्जीवित करने और भारत के साथ कूटनीतिक समानता बनाए रखने का प्रयास करना।
 - विदेश नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा पर सैन्य प्रभाव को मजबूत करना।
- **अमेरिका के लिए:**
 - भारत (लोकतांत्रिक साझेदार और चीन प्रतिपक्ष) के साथ संबंधों को प्रबंधित करने और पाकिस्तान (भू-रणनीतिक स्थान और क्षेत्रीय खुफिया) का लाभ उठाने के बीच एक नाजुक संतुलन का सामना करना पड़ता है।
 - लेन-देन संबंधी कूटनीति का सहारा लेने से भारत के साथ दीर्घकालिक विश्वास को नुकसान पहुंचने का खतरा है।

व्यापक विषय:

- सामरिक स्वायत्तता बनाम गठबंधन निर्भरता
- सैन्य कूटनीति और व्यक्तित्व-संचालित विदेश नीति
- दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय शक्ति संतुलन
- मूल्य-आधारित से लेन-देन संबंधी कूटनीति की ओर बदलाव

निष्कर्ष:

- भारत, पाकिस्तान और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच त्रिकोणीय गतिशीलता बदलती वैश्विक भू-राजनीति और बदलते प्रशासन और विकसित होते राष्ट्रीय हितों द्वारा संचालित रणनीतिक पुनर्संतुलन का प्रतिबिंब है। भारत के लिए, यह मुख्य सुरक्षा चिंताओं से समझौता किए बिना अपनी वैश्विक स्थिति को बनाए रखने में कूटनीतिक चपलता, रणनीतिक दावे और दीर्घकालिक दृष्टि की परीक्षा है।